मौसम आधारित एकीकृत कृषि परामर्श सेवा योजना
भौतिक शास्त्र एवं कृषि मौसम विज्ञान विभाग
जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

वर्ष–2014 | दिनांकः 09 से 13 जुलाई 2014 | दिनांकः 08.07.2014

(जिला अनूपपुर के लिए जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर एवं मौसम केन्द्र भोपाल द्वारा संयुक्त रूप से जारी)

आगामी पॉच दिनो का मौसम पूर्वानुमानः–

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित मध्यम कालिक मौसम पूर्वानुमान केन्द्र को भारत सरकार के भारत मौसम विज्ञान विभाग भोपाल, से प्राप्त जानकारी के आधार पर **अनूपपुर** तथा इसके आस–पास के क्षेत्रों में निम्नानुसार मौसम रहने की संभावना है।

District:Anuppur	09.07.2014	10.07.2014	11.07.2014	12.07.2014	13.07.2014
वर्षा (मि.मी.)	0	0	2	3	3
अधिकतम तापमान (डि.से.)	34	35	36	36	35
न्यूनतम तापमान (डि.से.)	26	27	26	26	26
बादलों की स्थिति	घने	घने	घने	घने	घने
आपेक्षित आद्रता (:)(सुबह)	48	47	59	63	67
आपेक्षित आद्रता (:)(शाम)	26	25	27	28	30
हवा की गति (कि.मी./घण्टा)	7	8	9	12	7
हवा की दिशा	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम

मौसम आधारित साप्ताहिक कृषि परामर्श दिनांकः 09 से 13 जुलाई 2014

चेतावनी : आगामी 24 घण्टों में गर्म हवायें चलने की संभावना है।

किसान भाई आगामी खरीफ मौसम में लगने वाली खाद बीज का प्रबंध करें तथा क्षेत्रीय अनुकूलता, फसल चक्र एवं **सिंचाई की उपलब्धता के आधार** पर उन्नत किस्मो के उच्च गुणवत्ता वाले प्रमाणित बीज का चयन करें ।

धान

अ. कम समय में पकने वाली किस्में — जे. आर. – 201, दंतेश्वरी, पूर्णिमा, सहभागी, **संकर धान** : जे.आर. एच. – 5, आर.

ब. मध्यम समय में पकने वाली किस्में — एम.टी.यू.1010, एम.टी.यू.10 81, महामाया, **सुगंधित किस्मेः** पूसासुगंधा–3, पूसासुगंधा–4, (1121) , पी. वी. –1 (1460)

मक्का

अ. दाने के लिए : एच. क्यू. पी. एम. –1, गंगा –11, जे. एम. –16, जे. एम. –8,

ब. चारे के लिए : अफ्रीकन टॉल

अरहर : अतिशीघ्र पकने वाली : उपास –120, मानक, आई. सी. पी. एल. – 87

शीघ्र पकने वाली : टी. जे. टी. –501, जे. के . एम. –189

मध्यम अवधि में पकने वालीः आई. सी. पी. एल. –87–119, आई. सी. पी. एल. –88039,

सोयाबीन : जवाहर सोयाबीन 95–60, जवाहर सोयाबीन 93–05, जवाहर सोयाबीन 97–52, जवाहर सोयाबीन 335, जवाहर सोयाबीन 20–29, जवाहर सोयाबीन 20–34, एन. आर. सी. –37

- सिंचाई की उपलब्धता होने पर कम समय मे पककर तैयार होने वाली धान प्रजाति/संकर धान की रोपणी तैयार करें ।
- कम तथा असामान्य वर्षा की स्थिति में किसान भाई तिली,, उड़द तथा मूँग की बोनी करें ।
- कम समय में पककर तैयार होने वाली अरहर प्रजाति उपास 120, मानक तथा सोयावीन 95–60, जबाहर सोयावीन 20–29 व 93–05 की बोनी एक दो दिन में कर लें ।
-

- वर्षा ऋतु में बोई जाने वाली विभिन्न फसलों जैसे धान, मक्का , ज्वार, तिल , सोयावीन, अरहर की प्रजातियों का चयन वैज्ञानिक सलाह के आधार पर कर बीज की व्यवस्था करें ।
- बीज की बोनी उपयुक्त बीजोपचार करने के पश्चात ही करें।
- भू एवं जल संरक्षण हेतु खेतो की मेढ़बन्दी करे तथा खेत के मोघों के मुहानों को बंद करें।
- खेतो का सतत् निरीक्षण करते रहें बीमारी कीट, नींदा आदि के प्रकोप से संबधित समस्या के निराकरण हेतु जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर / कृषि महाविद्यालय /निकटतम कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से सम्पर्क करें।

फल एवं सब्जियॉ

- टमाटर, बैगन, खरीफ प्याज, अगेती फूल गोभी एवं मिर्च की पौध तैयार करें।
- वर्षा ऋतु की सब्जियों की बुआई हेतु खेत तैयारी करें।
- वर्षा ऋतु में नये फलदार वृक्षों को लगाने हेतु गढ़ढ़ों को निश्चित सिफारिश की गई दूरी पर तैयार करें। फलदार पौधों हेतु बनाये गये गढढ़ों में गोबर की खाद भरकर बन्द करें
- खरीफ प्याज की रोपणी ऊॅची क्यारियॉ बनाकर करें।
- भिंडी, बरवटी एवं करेला बेंगन, मिर्ची, शिमला मिर्च, कददू जाति की फसलों की आवश्यकतानुसार तुड़ाई करें ।

पशु एवं मुर्गी पालन

- आसमान में बादल होने पर मुर्गी घरों में प्रकाश की अवधि बढ़ायें तथा उमस से बचाने के लिये खुली हवा का संचार पंखे व्दारा करें । विछावन को गीला होने से बचायें । दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु साफ दाना, हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ खिलाये। इनके आहार में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन, कार्वोहाइड्रेट वसा, विटामिनस, खनिज, लबण एवं एण्टीबायोटिक का समावेश करें ।
- बरसात के मौसम में हरे चारे के लिये ज्वार,मक्का तथा लोबिया की मिश्रित बुबाई करें ।
- वर्षा ऋतु मे होने वाले संक्रमण रोंगो जैसे एन्थ्रेक्स, गलघोटू, एवं एक टंगिया आदि की रोकथाम हेतु प्रतिरोधक टीके लगवायें।
- पशुओं को स्वस्थ्य रखने के लिए पशुओं के आहार में 50 ग्राम आयोडीन युक्त नमक तथा 50–100 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन दें।
- तापमान वर्तमान में अधिक हैं अतः पशुओं कों दिन एवं रात में दो तीन बार शीतल जल पिलायें तथा जानवरो को मच्छरों से बचाने हेतु पशु गृहों में धुआं करें।
- ब्रीडर चूजों एवं मुर्गीयों को बीमारी से बचाने के लिये मुर्गीयों के नीचे विछावन डालें तथा समय–समय पर बदलते रहें

नोडल आफीसर

09630112914

दिनांक : 08 जुलाई 2014